मधुबन ओम् शान्ति अंक 311 जून 2018

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(14-05-18)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा व्यर्थ को अवाइड कर समर्थ बनने वाले, विजय माला के विजयी रत्न, कथनी और करनी को समान बनाने वाले, हर घड़ी को अन्तिम घड़ी समझ सेकण्ड में फुलस्टाप लगाने वाले, ऐसे तीव्र पुरुषार्थ द्वारा सदा आगे बढ़ने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - अभी तो आप सब विशेष मनमनाभव, मध्याजी भव के स्मृति स्वरूप बन, अपनी एकरस अचल अडोल स्थिति में स्थित रह, विश्व कल्याण के लिए मन्सा द्वारा सर्वशक्तियों की सकाश देने की सेवा कर रहे होंगे। जून मास समीप आते ही विशेष प्यारे बापदादा के साथ मीठी मम्मा की मधुर शिक्षायें भी याद आती है, मम्मा कैसे हर घड़ी को अन्तिम घड़ी समझ सदा एवररेडी रह नम्बरवन विजयी बन गई। सदा एकवृता बन हर आज्ञा रूपी कदम पर कदम रखते, परमात्म स्नेही सो सबकी स्नेही बन गई।

अभी हम सबके सामने संगम की यह जो अमूल्य घड़ियां शेष हैं उसमें यही ध्यान रहे कि हमारे पुरुषार्थ में जो बातें थोड़ा भी टाइम वेस्ट करती हैं, उन्हें अवाइड करें। व्यर्थ वा निगेटिव को अवाइड करने से ही हम विजयी बन सकते हैं। समय प्रमाण अभी हम सब अपनी लगन को चेक करें। सच्चा रहने का व्रत लें, झूठ की अंश भी न हो फिर देखो बाबा कैसे मदद करता है। जहाँ बाबा राज़ी है वहाँ बाबा के हाथ में हाथ और सदा उसका साथ है।

मीठे बाबा की मुरली जब हम पढ़ते या सुनते हैं तो लगता है कि हमको कौन पढ़ा रहा है! पढ़ाने वाले से प्यार है तो फिर पढ़ाई में मेहनत नहीं लगती है। हम प्रभु के लाल, बाबा की कम्पनी से मालामाल हो गये हैं। भगवान हमें कम्पनी दे, कार्य में, योग में, चलने में भी उसकी ही कम्पनी है तो मेहनत किस बात की?

कई ऐसे हैं जो बहुत प्यार से दिल व जान से बाबा को भोग लगाते-लगाते बहुत अच्छे योगी बन गये हैं, तो भोग लगाना भी कोई मेहनत नहीं है, प्यार से भोजन बनाने में भी मेहनत नहीं है। जहाँ प्यार है, सच्चाई है, जरा सा भी इच्छा, ममता की अंश नहीं है वहाँ मेहनत नहीं है। मेहनत से फ्री होने के लिए साक्षी दृष्टा हो करके रहो तो प्रभु लीला को देख-देख सदा हर्षित रहेंगे। तो अभी समय की समीपता को सामने रख हरेक को यही सोचना है कि विनाश के पहले अपने विकर्मों का विनाश कैसे किया जाए? इसके लिए सभी भाई बहिनें बहुत लगन से योग तपस्या करते हैं। बाबा कहते बच्चे अब मन-बुद्धि की एकाग्रता ऐसी हो जिसमें संकल्पों की भी हलचल समाप्त हो जाए। शान्ति वा प्रेम के सागर के तले मे जाने का अभ्यास करो। इसी लक्ष्य से पाण्डव भवन में योग तपस्या के विशेष कार्यक्रम चल रहे हैं। शान्तिवन के भाई बहिनें पीसपार्क में ग्रुपवाइज़ तपस्या कर रहे हैं। ज्ञान सरोवर में विंग्स के प्रोग्राम तथा शान्तिवन में योग शिविर चल रहे हैं। सब तरफ बहुत अच्छा ज्ञान योग का वातावरण है।

मैं अभी कुछ दिन के लिए विशेष सभी भाई बहिनों के स्नेह भरे आह्वान पर लण्डन आई हूँ। थोड़ा दिन यहाँ रहकर वापस मधुबन पहुंच जाऊंगी। आप सबकी सूक्ष्म स्नेह भरी सकाश से अभी हमारी मीठी दादी गुल्जार की भी तबियत ठीक होती जा रही है। आशा है वह भी जल्दी से जल्दी ठीक होकर हम सबके बीच मधुबन पहुंच जायेंगी। अच्छा!

सभी को बहुत-बहुत याद....

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"परमात्म दुआयें लेनी हैं तो आज्ञा रूपी कदम पर कदम रखकर चलो"

1) बाप द्वारा जो भी आज्ञायें मिली हुई हैं, वह आज्ञायें ही बाप के कदम हैं। सिर्फ आज्ञा रूपी कदम पर कदम रखकर चलते चलो तो परमात्म दुआयें मिल जायेंगी। बच्चे माना ही बाप के फुट-स्टैप (पद-चिह्न) पर चलने वाले। जैसे बाप ने कहा ऐसे किया। बाप का कहना और बच्चों का करना - इसको कहते हैं नम्बरवन आज्ञाकारी।

2) जो बाप का डायरेक्शन है, श्रीमत है, उसको उसी रूप में पालन करना - इसको कहते हैं आज्ञाकारी बनना। ब्राह्मण बच्चों को हर बात में जो डायरेक्शन मिले उसमें एवररेडी रहना है। संकल्प मात्र भी मनमत वा परमत मिक्स न हो, तब कहेंगे श्रीमत पर चलने वाली श्रेष्ठ आत्मा।

3) बाप की आज्ञा है 'मुझ एक को याद करो'। अगर इस आज्ञा को पालन करते हैं तो आज्ञाकारी बच्चे को बाप की दुआयें मिलती हैं और सब सहज हो जाता है। जैसे लौकिक संबंध में भी आज्ञाकारी बच्चे पर माँ बाप का बहुत स्नेह होता है। वह है अल्पकाल का स्नेह और यह है अविनाशी स्नेह। यह एक जन्म की दुआयें अनेक जन्म साथ रहेंगी।

4) बापदादा ने अमृतवेले से लेकर रात के सोने तक मन्सा-वाचा-कर्मणा और सम्बंध-सम्पर्क में कैसे चलना वा रहना है - सबके लिए श्रीमत अर्थात् आज्ञा दी हुई है। हर कर्म में मन्सा की स्थिति कैसी हो उसका भी डायरेक्शन वा आज्ञा मिली हुई है। उसी आज्ञा प्रमाण चलते चलो। यही परमात्म दुआयें प्राप्त करने का आधार है। इन्हीं दुआओं के कारण आज्ञाकारी बच्चे सदा डबल लाइट, उड़ती कला का अनुभव करते हैं।

5) बापदादा की आज्ञा है - किसी भी आत्मा को न दु:ख दो, न दु:ख लो। तो कई बच्चे दु:ख देते नहीं हैं, लेकिन ले लेते हैं। यह भी व्यर्थ संकल्प चलने का कारण बन जाता है। कोई व्यर्थ बात सुनकर दु:खी हो गये, ऐसी छोटी-छोटी अवज्ञायें भी मन को भारी बना देती हैं और भारी होने के कारण ऊंची स्थिति की तरफ उड़ नहीं सकते।

6) बापदादा की आज्ञा मिली हुई है - बच्चे न व्यर्थ सोचो, न देखो, न व्यर्थ सुनो, न व्यर्थ बोलो, न व्यर्थ कर्म में समय गंवाओ। आप बुराई से तो पार हो गये। अब ऐसे आज्ञाकारी चरित्र का चित्र बनाओ तो परमात्म दुआओं के अधिकारी बन जायेंगे।

7) बाप की आज्ञा है बच्चे अमृतवेले विधिपूर्वक शक्तिशाली याद में रहो, हर कर्म कर्मयोगी बनकर, निमित्त भाव से, निर्माण बनकर करो। ऐसे दृष्टि-वृत्ति सबके लिए आज्ञा मिली हुई है। यदि उन आज्ञाओं का विधिपूर्वक पालन करते चलो तो सदा अतीन्द्रिय सुख वा खुशी सम्पन्न शान्त स्थिति अनुभव करते रहेंगे।

8) बाप की आज्ञा है बच्चे तन-मन-धन और जन – इन सबको बाप की अमानत समझो। जो भी संकल्प करते हो वह पॉजिटिव हो, पॉजिटिव सोचो, शुभ भावना के संकल्प करो। बॉडीकान्सेस के ''मैं और मेरेपन से'' दूर रहो, यही दो माया के दरवाजे हैं। संकल्प, समय और श्वांस ब्राह्मण जीवन के अमूल्य खजाने हैं, इन्हें व्यर्थ नहीं गंवाओ। जमा करो।

9) समर्थ रहने का आधार है - सदा और स्वत: आज्ञाकारी बनना। बापदादा की मुख्य पहली आज्ञा है - पवित्र बनो, कामजीत बनो। इस आज्ञा को पालन करने में मैजारिटी पास हो जाते हैं। लेकिन उनका दूसरा भाई क्रोध - उसमें कभी-कभी आधा फेल हो जाते हैं। कई कहते हैं - क्रोध नहीं किया लेकिन थोड़ा रोब तो दिखाना ही पड़ता है, तो यह भी अवज्ञा हुई, जो खुशी का अनुभव करने नहीं देगी।

10) जो बच्चे अमृतवेले से रात तक सारे दिन की दिनचर्या के हर कर्म में आज्ञा प्रमाण चलते हैं वे कभी मेहनत का अनुभव नहीं करते। उन्हें आज्ञाकारी बनने का विशेष फल बाप के आशीर्वाद की अनुभूति होती है, उनका हर कर्म फलदाई हो जाता है।

11) जो आज्ञाकारी बच्चे हैं वे सदा सन्तुष्टता का अनुभव करते हैं। उन्हें तीनों ही प्रकार की सन्तुष्टता स्वत: और सदा अनुभव होती है। 1- वे स्वयं भी सन्तुष्ट रहते। 2- विधि पूर्वक कर्म करने के कारण सफलता रूपी फल की प्राप्ति से भी सन्तुष्ट रहते। 3- सम्बन्ध-सम्पर्क में भी उनसे सभी सन्तुष्ट रहते हैं।

12) आज्ञाकारी बच्चों का हर कर्म आज्ञा प्रमाण होने के कारण श्रेष्ठ होता है इसलिए कोई भी कर्म बुद्धि वा मन को विचलित नहीं करता, ठीक किया वा नहीं किया। यह संकल्प भी नहीं आ सकता। वे आज्ञा प्रमाण चलने के कारण सदा हल्के रहते हैं क्योंकि वे कर्म के बन्धन वश कोई कर्म नहीं करते। हर कर्म आज्ञा प्रमाण करने के कारण परमात्म आशीर्वाद की प्राप्ति के फल स्वरूप वे सदा ही आन्तरिक विल पावर का,

अतीन्द्रिय सुख का और भरपूरता का अनुभव करते हैं।

13) आज्ञाकारी बच्चे मर्यादा की लकीर के अन्दर रहने के कारण माया को दूर से ही पहचान कर विजयी बन जाते हैं। उन्हों पर माया वार नहीं कर सकती।

14) आज्ञाकारी बच्चे बिना श्रीमत के एक सेकण्ड या एक पैसा भी यूज नहीं कर सकते। जब सब परमात्मा का हो गया तो अपने प्रति या आत्माओं के प्रति यूज कैसे कर सकते। डायरेक्शन प्रमाण कर सकते हैं। नहीं तो अमानत में ख्यानत हो जायेगी। थोड़ा भी धन बिना डायरेक्शन के कहाँ भी कार्य में लगाया तो वह धन, मन को खींच लेगा। और मन, तन को खींच लेगा और परेशान करेगा।

15) जो भी श्रीमत वा आज्ञा समय प्रमाण जिस रुप से मिली हुई है, उसी समय उसी रूप से उसे प्रैक्टिकल में लाओ तो सदा ही ब्रह्मा बाप समान तुरत दानी महापुण्य आत्मा बन नम्बरवन में आ जायेंगे।

16) आज्ञाकारी बनना - यही बाप समान बनने की सहज विधि है। आज्ञाकारी बच्चे सदा श्रीमत पर चलते रहते, उसमें मनमत वा परमत की एडीशन नहीं करते, इसलिए कोई भी परिस्थिति उन्हें नीचे नहीं ला सकती, वे सहज ही विघ्न-विनाशक बन जाते हैं।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 23-09-14 *मधुबन*

"ड्रामा में संगम का हर दिन न्यारा और प्यारा है इसलिए मजा ही मजा है"

(दादी जानकी)

यह शरीर तो हमारा अच्छा टेस्ट लेता है। दिन-रात मैं कहती हूँ तू भले अपना काम कर, मैं अपना काम करती हूँ। शरीर तू अपना काम कर, आत्मा तू अपना काम कर। आपके शरीर अच्छे हैं, प्लेन में उड़के आये हैं और प्लेन बुद्धि से प्लेन में उड़के मधुबन में आओ तो कितनी खुशी की बात है। ज्यादा खुशी आपको है या मेरे को है? किसको है? क्योंकि यह खुशी संगमयुग पर वन्डरफुल है। बाबा देखता है बच्चों को ड्रामा की नॉलेज अच्छी जंच रही है। ड्रामा की नॉलेज कहती है कोई हर्जा नहीं है। हमारा बाबा कैसा है, क्या है, क्या करता है? पहले है बाबा की नॉलेज, बाबा कौन है? फिर है ड्रामा की नॉलेज। ड्रामा की नॉलेज से फुलस्टॉप लगाना सहज हो जाता है। मुझे अज़ब लगता है कोई कोई को क्वेश्चन उठाना आता है, फुलस्टॉप लगाना नहीं आता है। किसी को फुलस्टॉप लगाना न आये माना वो बुद्धू है। बुद्धू शब्द जो है, इसे कोई भी लैंगवेज में यूज़ कर सकते हैं। क्वेश्चन उठाता है तो बुद्धू है ना। जो अच्छी बुद्धि वाले हैं वो क्वेश्चन नहीं उठाते हैं।

इस ड्रामा में संगम का हर एक दिन न्यारा है इसलिए प्यारा लगता है। अगर हर एक दिन न्यारा न हो तो कोई मजा ही न आये। अभी रोज़ आप यहाँ आते हो मिलने, मुझे पता है कौनसी खींच में आते हो? मैं अभी आप सबके नाम, रूप, देश, काल सब भूल गई हूँ, बाकी यह है कि मैं आत्मा हूँ, बाबा का बच्चा हूँ, हम सब एक ही देश के रहने वाले हैं, जिस कारण प्यार बहुत है। नाम तो शरीर का है ना, वो तो 84 जन्मों में भिन्न-भिन्न नाम मिले हुए होंगे। 84 जन्म पक्का है ना! पर यह जो संगमयुग का नाम, रूप है वो अच्छा है।

अभी मुझे न कोई चिंतन, न कोई चिंता.... अभी फॉरेनर्स आने वाले हैं, फलाना होने वाला है... भले आयें, जी आयें। चिंतन भी नहीं है, हरेक अपना भाग्य का खाता है। मैं भगवान का बच्चा भाग्यवान हूँ।

कितनी अच्छी यह महफिल है। गीत है ना – महफिल में जल उठी शमा परवाने के लिये... यह गीत की लाइन बड़ी अच्छी है। भले बाबा अभी साकार में नहीं है परन्तु निराकार, अव्यक्त रूप में हमारे साथ है और हमको भी सिखा रहा है - साकार शरीर में होते हुए भी निराकारी, निर्विकारी बन जाओ। जितना निराकारी बनेंगे उतना निर्विकारी, निरहंकारी बनते जायेंगे। जब बाबा अव्यक्त हुआ, बाबा ने जो सिखाया निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी। तो हमको भी ऐसे बनना है। सिम्पल है, बहुत बड़ा ज्ञान नहीं है। बाबा ने यह नेचर बना दी है बच्ची पास्ट इज़ पास्ट, बीती को चितवो नहीं, आगे की रखो न आश। तो क्या हुआ? अच्छा हुआ।

बाबा सारे विश्व में सेवा कराता है, भिन्न-भिन्न देशों से मिलन मनाने मधुबन में पहुँचे हैं। मुझे कहते हैं तुम क्या सिखाती हो? सच्चाई और प्रेम। इसी आधार से सारे विश्व में बाबा ने सेवा कराई है। बाबा ने सेवा अर्थ सभी जगह भेजा, ऐसा कोई देश नहीं रहा होगा जहाँ नहीं गई होंगी, अभी यहाँ (मधुबन में) बैठ गई हूँ। अच्छा।

दूसरा क्लास

"हम बाबा के बच्चे सिर्फ गोद में बैठने के लिए नहीं बने हैं, हमें अच्छी पढ़ाई पढ़के गले की माला बनना है"

अभी मैं क्या बोलूँ? ऐसी सूरत मूरत को देख मेरे को तो बाबा बहुत याद आता है। जहाँ तहाँ बाबा ने आप सबको निमित्त बनाया है। सब सेवा करने में इतने मस्त हैं, इतनी सेवा अच्छी कर रहे हैं जो मैं देख देख, सुन सुन करके कहती हूँ, कहाँ से निकले हैं, कहाँ पहुँचे हैं, क्या बाबा करा रहा है, क्या कर रहा है! तो बाबा करनकरावनहार है, करता वो है, कराता इनसे हैं, हम क्या करते हैं? मैं तो कुछ नहीं करती हूँ।

सभी जगह सब सेवाओं में बहुत खुश हैं, तो मैं कहती हूँ खुशी सेवा में है, खुशी याद में है या खुशी आपस में मिलने में है? या खुशी ज्ञान के चिंतन में है? मनन, चिंतन, मंथन में ज्ञान अच्छा लगता है। ज्ञान अच्छा कैसे लगेगा? जो मन को बात अच्छी लगती है। कहेंगे मन को, हाथ लगायेंगे दिल को। तो दिल को जो बात अच्छी लगती है वही मन को भी अच्छी लगती है। फिर है बुद्धि, उसी चिंतन की गहराई में जाने से मंथन हो जाता है, तो वो ज्ञान रत्न बन जाता है। बाबा ने हमेशा यह गिफ्ट दिया है बच्ची, विचार सागर मंथन करो। विचार सागर मंथन करने से क्या होता है, मैं कैसे सुनाऊं, कहाँ सुनाऊं! विचार सागर मंथन करने में सुख मिलता इलाही है।

बाबा के बच्चे बने हैं तो सिर्फ गोद में बैठने के लिये नहीं बने हैं, अच्छी पढ़ाई पढ़के गले की माला बनने के लिये बच्चे बने हैं। बाबा ने एडाप्ट करके गोद तो लिया, बाबा ने एडॉप्ट तो किया पर बच्चा गोद में ही बैठा रहे और ऊं ऊं... करता रहे, हाँ हूँ करके चिल्लाता रहे, बाबा को ऐसा बेबी बुद्धि वाला बच्चा नहीं चाहिए। बाबा यह बात है, यह बात है, बाबा कहते बच्चे कोई बात नहीं है। बाबा के गले की माला बनना है तो बाबा जैसा समझदार बच्चा बनना है। गले की माला बनना भी बड़ी बात नहीं है, एक दो के समीप आने से, स्नेह के धागे में पिरोने से 108 की माला में तो आ सकते हैं, पर मुझे तो 8 में आना है। मैंने गुल्जार दादी को कहा बाबा को पूछो ना 8 में कौन आयेंगे? तो दादी कहती है आप तो आयेंगी। बाकी अभी बताओ आप में से 8 में कौन आयेंगे! 8 में आने के लिये क्या पुरुषार्थ करना है? बाप समान बनने का पुरुषार्थ करना है। एकदम जैसा बाबा, बाबा में और उसमें कोई अन्तर दिखाई न पड़े। और वो औरों को बाप समान बनायेगा फिर उनको देख करके और भी बाप समान बनेंगे। तो अष्ट में पहले महिमा योग्य फिर गायन योग्य फिर पूज्यनीय योग्य बनते हैं।

तीसरा क्लास

"जो खुद सन्तुष्ट रहता है वह सबको सन्तुष्ट करता है, उसकी दिल बड़ी होती है"

एक तो बाबा कहते बच्चे निराकारी, निर्विकारी, निरंहकारी बनना है। दूसरा, बाबा ने कहा था निन्दा हमारी जो करे मित्र हमारा सोय। इसमें आप सभी पास हैं? थोड़ा तो चेहरे पर आता है!

प्रश्नः- दादी जी संतोषी माँ पहले या सन्तुष्टमणि पहले, दोनों में क्या अन्तर है? और अगर है तो पहली स्टेज कौन-सी है?

उत्तरः- सन्तुष्ट रहना। जो सन्तुष्ट रहते हैं उनसे औरों को भी सन्तुष्टता मिलती है क्योंकि जो खुद सन्तुष्ट नहीं रहते हैं तो दूसरे उनसे सन्तुष्ट नहीं होते हैं। अगर मैं सन्तुष्ट हूँ तो ऑटोमेटिक जहाँ कदम रखेंगे सभी सन्तुष्ट होंगे, यह भगवान की दया है जो अन्दर में सन्तुष्टता रहती है। तो ऑटोमेटिक उसकी दिल बड़ी होती है, जिससे सबके प्रति हारमनी रहती है, फलस्वरूप सबका सहयोग मिलता है इसलिए सन्तुष्ट आत्मा, करूँ न करूँ, फायदा है या नहीं, यह सोचता नहीं है। सिम्पल रहके सब कुछ सफल करने वाले सन्तुष्ट रह

सकते हैं। कभी भी आपस में किसी के प्रति भी कोई कम्पलेन्ट न हो। ऐसे भी नहीं कहो कि यह तो कभी अपनी गलती मानने वाले नहीं है। कहते भी हैं हारमनी.... हार मानी झगड़ा टूटा, कोई खिटपिट नहीं।

प्रश्नः- दादी जी, आपके सामने जब भी कोई शारीरिक टेस्ट आता है तो आपमें जो साइलेंस की पॉवर है वो आपमें कोई स्पेशल शक्ति ले आती है, जिससे आप उस टेस्ट को पास करने के बाद और ही पॉवरफुल और ही स्ट्रांग महसूस करती हैं? अभी जो लास्ट शारीरिक टेस्ट आया उस टेस्ट के समय में आपको क्या अन्दर में आन्तरिक शक्ति महसूस हुई? अभी छः महीने से आपका जो शारीरिक टेस्ट हुआ उसमें आपको किस आन्तरिक शक्ति की महसूसता हुई?

उत्तरः- पहली शक्ति तो सर्वशक्तिवान बाबा की शक्ति है जो चला रही है, यहाँ बिठाया है। यहाँ बिठाता है सर्वशक्तिवान, उसमें भी जो शक्ति चाहिए वह टाइम पर आयेगी, एक्यूरेट पार्ट बजायेगी। बाकी रही सहनशक्ति, समाने की शक्ति, समेटने की शक्ति। अगर सहनशक्ति न होती तो मैं यहाँ नहीं पहुँच सकती थी। हॉस्पिटल है, फलाना है... फिर भी मिनट में वो सब फिनिश करके मैं यहाँ पहुँच गई। समेटने की शक्ति यूज़ करो, विस्तार में नही जाओ। जो भी है हो गया, बस, फिनिश। सहनशक्ति है तो समाने की शक्ति है, हो गया ना, रिपीट नहीं करो। जो कोई बात रिपीट करता है वो कम बुद्धि वाला है। अपनी या दूसरे की कमी वो बताता है, यह है तो अच्छा परन्तु... यह परन्तु... क्या यही ज्ञान है? समेटने की, समाने की शक्ति कहाँ गई! आखिर यही भावना थी मैं यहाँ मधुबन पहुँच जाऊं, कैसे मुझे लेके आये वो सीन जो भी थी वो पूरी हुई, यहाँ पहुँच गई ना बस। अगर मैं यहाँ न होती तो आप लोगों को क्या महसूस होता? मिसिंग और खाली महसूस होता ना।

प्रश्नः- दादी जी, आप जब दृष्टि देते हैं, अव्यक्त बाबा जब दृष्टि देते हैं, तो जैसे पॉवर का अनुभव होता है, करेंट का अनुभव होता है। तो जब दृष्टि देते हैं तो उस समय आपकी क्या फीलिंग होती है, जो हम भी दृष्टि देवें तो वो औरों को भी उसका अनुभव हो?

उत्तरः- सारे ज्ञान का सार है - मनमनाभव, मध्याजीभव, यह गीता में भी है। तनमनाभव और धनमनाभव मैजारिटी है पर मनमनाभव और मध्याजीभव नहीं हैं। अपने आपको समझना और जो बाबा का लक्ष्य है, हमारे को बनाने का, ऐसा बनना, यह लेन-देन ऑटोमेटिक खींचती है। दृष्टि से भी शुभ भावना की ही लेन-देन होती है।

हम सबको सद्गति दाता बाबा मिला है। हम बच्चे क्या कर रहे हैं? बाबा तो दाता है क्योंकि इस तन में आकर अपना बनाके हर बात सहज और स्पष्ट पढ़ा दी है इसलिए कोई बात मुश्किल नहीं है। पढ़ाई और पालना प्रैक्टिकल लाइफ में है, तो उससे ऐसा लगेगा कोई कमी नहीं है। लक्ष्मी-नारायण यह दो शब्द क्यों है? नारायण लक्ष्मी क्यों नहीं कहते हैं? नारायण जैसा बनने के लिये लक्षण चाहिए, एम हो। बाप के साथी बन बाप के समान सेवा करें। सेवा क्या है? ऐसा स्मृति में रहना जो औरों को स्मृति आ जाए। और कोई बात की तेरी बात इसकी बात... मैं इनसे पूछेंगी फलाना कैसा है? मेरे से कोई नहीं पूछ सकता, फलाना कैसा है? प्यार में पूछेंगे तबियत ठीक है! अगर कोई किसी को स्वभाव वा व्यवहार के कारण फलाना कैसा है, यह सोचते वा पूछते हैं तो यह शुभ चिंतन शुभ चिंतक नहीं है, इसलिए कोई कैसा भी हो सबके लिये शुभ चिंतन ही हो, सबके प्रति शुभ चिंतक ही हो - यह है पुरुषार्थ। शुभ चिंतक रहने से और कोई चिंतन नहीं चलता है। तो पुरुषार्थ में यह कभी भी भूल न होवे।

मैं टाइम के वश नहीं हूँ, आज जो हुआ फिर कल्प के बाद होगा। ड्रामा की नॉलेज है। सारे यज्ञ की हिस्ट्री में बाबा ने कहा है, इसको यज्ञ क्यों कहा जाता है? भगवान ने यज्ञ रचा है अधर्म का नाश, सत् धर्म की स्थापना के लिये। यज्ञ क्यों रचा जाता है? यज्ञ में एक होता समर्पण होना, फिर जब समर्पण हो गये, तन मन धन मेरा नहीं, तो तन मन धन क्या कर रहा है? उसके बिगर तो नहीं चलता है। तन के बिगर, मन के बिगर, धन के बिगर नहीं चलता है, तीनों चाहिए। परन्तु मेरा नहीं है, यज्ञ में सफल हो रहा है, उनसे हमारी जीवन सफल हो रही है। न सिर्फ मेरी जीवन सफल हो रही है पर अनेकों की जीवन सफल हो रही है। जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में होंगे उनके लिये भी विशेषात्मा हूँ, तो मैं विशेष आत्मा हूँ यह नहीं, पर सेवा में विशेष आत्मा हैं, दिखावा या दिखाने के लिये नहीं है।

तो पवित्रता, सत्यता, नम्रता, धैर्यता, मधुरता इन पाँचों में से एक भी मिस न हो। यह पाँच बातें न सिर्फ सुनाने के लिये या सुनने के लिये हैं पर हमारे से मिस न हो, हमारे प्रैक्टिकल लाइफ में हों। पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं है, ब्रह्माचारी। हमारा धर्म क्या है और हमारा कर्म कैसा हो, यह सारी विश्व सीखी है। कर्म हमारा कैसा हो, खाना हमारा कैसा हो, कपड़ा कैसा हो। अच्छा।

"हर कदम में पदम जमा करना है तो याद सच्चे दिल की और निरन्तर हो"

(गुल्जार दादी जी)

मधुबन का वायुमण्डल शक्तिशाली है, यहाँ आप सभी आकर बेफिकर बादशाह बन जाते हो। किसी को कोई फिकर है क्या! घर, बच्चे, पोत्रे धोत्रे याद हैं क्या! वो वहाँ अच्छे पल रहे हैं और आप यहाँ बेफिकर बादशाह बनके बाबा से मिलन मना रहे हो। यहाँ कोई फिकर नहीं है। न दफ्तर जाना है, न बच्चों को स्कूल भेजना है। यहाँ सिर्फ पढ़ाई करनी है और पढ़ाने वाले की याद तो स्वत: आती है। ये चांस जो बाबा हमको देते हैं, इसका पूरा लाभ लेना चाहिए। अगर कोई नियम पर चलने वाला है, तो कायदा बहुत फायदा देता है। कोई कायदे पर नहीं चलते हैं तो इतना फायदा नहीं होता है। कई कहते हैं कि मधुबन अच्छा तो बहुत लगा, शक्ति भी मिली परन्तु जो बाबा कहता है उतना तो अनुभव नहीं किया। क्यों नहीं किया? अनुभव की खान पर कोई जाये और अनुभव की खान से भरपूर न कर पाये, तो उसे क्या कहेंगे! यह खान तो भरपूर है लेकिन लेने वाले की अपने हिम्मत की बात है। यहाँ पर भिन्न-भिन्न आत्माओं द्वारा अनुभव कराने की क्लासेस चलती रहती हैं। यहाँ की दिनचर्या के हिसाब से देखो कि एक क्लास पूरा होता है फिर खाने की थाली मिलती है फिर क्लास करो। लेकिन अनुभव की खान पर आये हो तो इस अनुभव की खान से जितना अनुभव करने चाहो उतना कर सकते हो क्योंकि बाबा ने आपको विशेष निमन्त्रण दिया है, आओ बच्चे, भगवान ने बुलाया है, तो भगवान क्या नहीं दे सकता है। दाता है ना, तो दाता के निमन्त्रण पर आये हैं इसलिए जितना लेने चाहो उतना ले सकते हो। यहाँ अपना समय एक सेकण्ड भी व्यर्थ नहीं गँवाना है, क्योंकि यहाँ वायुमण्डल, परिवार, बड़े-बड़े अनुभवी भाई-बहनों का संग है। तो संग का रंग लगता ही है। यह हरेक को लॉटरी मिलती है। इस लाटरी को लेकर आप अपने को बहुत भरपूर कर सकते हैं। कहाँ भी बुद्धि नहीं जाये क्योंकि कोई जिम्मेवारी है ही नहीं। पढ़ाई और याद, सिर्फ मन्सा सेवा करो। मन्सा सेवा का भी अभ्यास यहाँ बहुत अच्छी तरह कर सकते हैं क्योंकि जिम्मेवारी कोई है ही नहीं। आज फरिश्तेपन की बातें सुनी, तो फरिश्ते का मतलब ही है डबल लाइट। फरिश्ता अर्थात् जिसका पुरानी दुनिया, पुराने संस्कार से कोई नाता नहीं। इन सबसे न्यारा और बाप का प्यारा। एक बाबा दूसरा मैं, तीसरा न कोई। तो ऐसा अनुभव कर रहे हैं? जितने भी दिन आप यहाँ रहे, उसमें कमाई की? हमारी कमाई का क्या हिसाब होता है? ब्राह्मण जीवन की कमाई का हिसाब बहुत बड़ा है। बाबा कहते हैं कि अगर सच्चे दिल में सच्चे बाप की याद है तो हर कदम में पदम मिलता है। आप सोचो हर कदम में पदम, तो आप कितने कदम उठाते होंगे। अगर याद में कदम उठाया तो पदम आपका जमा हो गया। और सारे दिन में आपकी कितनी कमाई जमा हो गयी। कितनी सहज और बड़ी प्राप्ति है। ऐसा कोई दुनिया में होगा, चाहे कितना भी बड़ा हो। हमारे तो कदम में पदम हैं क्योंकि हमको कमाई कराने वाला देखो कौन है? दाता है, उसके पास तो कोई कमी है ही नहीं इसलिए बहुत कुछ मिल सकता है। आप चेक करना। अमृतवेले बहुत बढ़िया कमाई का साधन है। जिसको भगवान मिला उसे और चाहिए क्या! और एक ही हमारा ऐसा बाबा है जो सर्व सम्बन्ध भी निभा सकता है, सर्व प्राप्ति भी करा सकता है। जिस समय चाहिए उस समय हज़ूर हाज़िर हो जाता है। बाबा कहो और बाबा सामने आ जाता है। लेकिन किसके आगे हज़ूर हाज़िर है? जो हज़ूर की हर श्रीमत को जी हाँ, जी हाँ, हाजिर बाबा प्रैक्टिकल में करता है। कैसी भी परिस्थिति हो, माया आये भी तो वार नहीं करे, हार खाके जाये।

हम लोग छोटेपन में ही यज्ञ में आये थे, तो मम्मा हमको छोटी-छोटी बातों से समझाती थी कि तुम लोग माया-माया क्या करती रहती हो, जैसे कोई घर में बड़ा होता है तो उसके पोत्रे धोत्रे उसके साथ खेलते हैं। नाक भी पकड़ते हैं, बाल भी खींचते हैं लेकिन वो परेशान होता है क्या? उसको पता है कि ये मेरे से खेलते हैं। तो ये सब विकार भी आपसे खेलते हैं। मम्मा कहती थी - व्यर्थ संकल्पों का गेट है क्यों?

Why नहीं कहो वाह! कहो। व्यर्थ संकल्प में क्यों पहले आता है फिर कैसे, कब, कहाँ .... ये सब आता है। मम्मा कहती थी कै-कै कौन कहता है? कौआ। तो कौआ बनना अच्छा लगता है या होलीहंस बनना अच्छा है? हंस की विशेषता क्या होती है? उसमें निर्णय शक्ति बहुत अच्छी होती है। वो कंकड़ में से रत्न चुगता है। वो तो हंस है, आप होलीहंस हो।

एक बार ब्रह्मा बाबा वीकली पेपर देख रहे थे, उसमें एक चित्र था, चरचिल प्रेसीडेन्ट का, वो अंगुलियों से V बना के दिखा रहा था। तो बाबा ने कहा कि देखो यह बता रहा है कि विक्ट्री हमारा बर्थ राइट है। तुम्हारा भी ऐसा चित्र होना चाहिए। आपके मस्तक में भी विजय का तिलक है ना। पाण्डवों को विजयी पाण्डव दिखाते हैं। सिर्फ लड़ाई करने वाले नहीं।

राम को तीर कमान दिखाते हैं और श्रीकृष्ण के पास मुरली दिखाते हैं। मुरली कितनी हल्की होती है और तीर कमान का कितना बोझ होता है। राम अर्थात् कुछ न कुछ लड़ाई करने का रह गया, उसकी निशानी तीर कमान और श्रीकृष्ण पास हो गया तो वो खुद भी नाचे और दूसरे भी नाचें। नाचना सिर्फ पाँव से नहीं होता, खुशी माना नाचना।

बाबा कहते हैं - युद्ध नहीं करो। बच्चे कहते हैं बाबा हमने दो घण्टा योग लगाया। बाबा कहता दो घण्टा योग में बैठे, योगी बनके बैठे या योद्धे भी बने? क्योंकि व्यर्थ संकल्प आया उसको हटाया तो योगी बने या योद्धे हुए? तो योगी भी बनते रहते और योद्धे भी बनते रहते। बार-बार वार करो, नहीं। मुरली माना खुशी में नाचते रहो और नचाते रहो, मन की खुशी। ये निशानी है सूर्यवंशी। और बार-बार युद्ध करना पड़े तो वो निशानी है चन्द्रवंशी की। कई पूछते हैं पता नहीं मेरा भविष्य क्या है? बाबा कहता है मैं नहीं बताऊंगा, लेकिन मैंने आइना दे दिया है। खुद ही देखो मैं कौन हूँ! आपको अगर देखना है कि मैं राजा बनूंगा या नहीं तो उसका आइना है कि सारे दिन में मैं स्वराज्य अधिकारी कितना समय बना? सब कर्मेन्द्रियां मेरे कन्ट्रोल में हैं? राजा माना जिसकी सारी प्रजा कन्ट्रोल में हो। इसमें अपने आपको चेक करो। आँखें धोखा तो नहीं देती? मुख धोखा तो नहीं देता? कानों से परचिन्तन सुन लिया, दिमाग में फालतू संकल्प चल रहे हैं। तो ये कन्ट्रोल नहीं है ना! तो जब स्वराज्य नहीं तो भविष्य का राज्य कैसे मिल सकता है। इसी से आप समझ लो कि मैं राजा बनूंगा, रॉयल फैमिली वाला बनूंगा या साधारण प्रजा बनूंगा। यह आइना है। तो अपने को चेक करो कि मेरी सर्व कर्मेन्द्रियां कन्ट्रोल में हैं या नहीं?

बाबा रोज़ अपने कर्मेन्द्रियों की कचहरी लगाता था। पूछता था हे मन तुम बताओ तुम्हारा सारे दिन का काम कैसे चला? आँख, कान बताओ कैसे काम चला, कोई ने घोखा तो नहीं दिया? हमको भी अपनी चेकिंग आपेही करनी है। चेक करके फिर चेन्ज करो। लेकिन चेन्ज तब कर सकेंगे जब शक्ति होगी। अच्छा - ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

बाप की प्रत्यक्षता करनी है तो मर्यादाओं का कंगन बांध मेरे तेरे के बंधनों से मुक्त बनो

1) हम सब प्यारे बापदादा को प्रत्यक्ष करने का प्लैन बना रहे हैं। सेवाओं के बहुत अच्छे-अच्छे उमंग आते, सभी उसी उमंग-उत्साह से चारों ओर सेवाओं की धूम मचायेंगे ही। लेकिन मीठा बाबा कहते बच्चे अब तेरे मेरे की माया से मुक्त बनो। आपसी स्नेह और फेथ के आधार पर संगठन को एकमत बनाओ तब बापदादा की प्रत्यक्षता होगी। इसके लिए सदा बुद्धि में रहे कि आपका कार्य सो मेरा कार्य।

2) जहाँ दिल का सच्चा स्नेह और विश्वास है वहाँ मैं और तू, तेरा और मेरा सब समाप्त हो जाता है। आपकी महिमा सो मेरी महिमा। आपकी बड़ाई सो मेरी बड़ाई इसलिए हम अपने समान साथी को इतना रिगार्ड दें जो वह आपेही हमें दे, कहना न पड़े, यह हमारी ईश्वरीय मर्यादा है।

3) हरेक की विशेषताओं को देखना है। हरेक में बाबा ने कोई न कोई खूबी जरूर भर दी है। बड़ी बड़ाई बाबा की है,

मेरी नहीं। सदैव अपने सामने लक्ष्य हो ''बाबा।'' बाबा ने हमें निमित्त बनाया है।

4) लॉ उठाना, टोन्ट कसना, टोक देना, यह मेरा काम नहीं है। मैं कभी भी अपने हाथ में लॉ नहीं उठा सकती। हमें बाबा जो सेवा देता उसे दिल से करना है। किसी से भी रीस नहीं करनी है। बाप समान बनने की रेस जरूर करनी है।

5) हरेक की बात का भाव समझना है, स्वभाव को नहीं देखना है। अगर किसी की गलती दिखाई भी देती है तो बाबा ने हमें समाने की शक्ति भी दी है। कभी एक की बात दूसरे से वर्णन नहीं करना है। भल सुनो, लेकिन उसे वहीं पर सुनी अनसुनी कर दो। भूल को अन्दर रखने से वायब्रेशन खराब होता है। दूसरे की भूल को अपनी भूल समझो।

6) अपनी स्थिति को सदैव सुखमय रखो। कभी भी तंग दिल, उदास दिल नहीं बनना है। कोई झूठा अपमान करेगा, कोई सच्चा। दुनिया की टक्करें अनेक आयेंगी लेकिन हमें उदास नहीं होना है। पत्थर भी पानी की लकीरें खा-खाकर पूज्यनीय बनता है। तो हमें भी सब कुछ सहन करके चलना है। हलचल को समाप्त करने का साधन है - बाबा से बातें करना। बाबा के पास जाओ तो बाबा आपेही कदमों में बल भर देगा।

7) मुझे किसी भी आत्मा पर डिपेन्ड नहीं करना है। आत्मा पर डिपेन्ड करने से बैलेन्स बिगड़ जाता है। बाबा पर डिपेन्ड करो। एक दो का आधार लेकर चलना बिल्कुल गलत है। मुझे तो साथी चाहिए, सहयोग चाहिए.. नहीं। मेरा साथी एक बाबा है। मैं बाबा से ही सहयोग लूँ।

8) दूसरों को सन्तुष्ट करना - यह बहुत बड़ा पुण्य है। इससे हमारी आत्मा को बल मिलता है। किसी के गुणों पर मोहित नहीं होना है। सदा बाबा को आगे रखो। बाबा को आधार बनाओ तो किसी में भी फसेंगे नहीं।

9) हमारा संसार बाबा है इसलिए कभी भी अन्दर में यह भावना नहीं आनी चाहिए, यह मेरा स्टूडेन्ट, यह तेरा। किसी भी प्रकार का स्वार्थ न हो। स्वार्थ अधीन बना देता है। किसी देहधारी में स्नेह जाता है माना स्वार्थ है। इस स्वार्थ से ईश्वरीय मर्यादाओं का उल्लंघन होता है इसलिए साकार बाबा जैसे नि:स्वार्थी था वैसे नि:स्वार्थी बनो। तो सबसे न्यारे और प्यारे बन जायेंगे।

10) विघ्नों से कभी घबराओ नहीं। विघ्न भल कितना भी बड़ा हो लेकिन अपने संकल्प से कभी भी बड़ा नहीं करो। जड़ को समझकर बीज को काटो। जड़ क्या है उसको समझो।

11) माया से डोन्टकेयर करना ठीक है, आपस में नहीं। जो आपस में डोन्ट केयर करते उनकी जबान पर लगाम नहीं रहता। जो आता वह बोल देते, यह स्वभाव भी डिससर्विस करता है।

12) जिद्द का स्वभाव ही ज्ञान में बहुत विघ्न डालता है। जिद्द वाले अपना और दूसरों का नुकसान करते हैं। जहाँ जी हाँ का स्वभाव है वहाँ सब फूल बरसाते, दुआयें देते, जहाँ जिद्द है वहाँ पानी के मटके भी सूख जाते हैं।

13) हमें सदा अपने स्वमान में रहना है, नाउम्मींद नहीं बनना है। ऐसे कभी नहीं सोचो यह तो मेरे पुराने संस्कार हैं। यह सोचना भी उसकी पालना करना है। मेरा दिव्य संस्कार हो, ईश्वरीय संस्कार हो। जो बहुत समय से पाले हुए संस्कार हैं उन सब संस्कारों को जीरो देने का दृढ़ संकल्प करो। रियलाइज कर उन्हें खत्म करो। व्यर्थ संकल्प तभी खत्म होंगे जब व्यर्थ संस्कार खत्म होंगे।

14) अपने को दुआओं के आधार पर चलाओ। बाबा की दुआयें लेते चलो। मुझे हर आत्मा से दुआ जरूर मिलनी चाहिए। दुआयें हमारा प्यार हैं, प्यार ही हमारी दुआयें हैं। जहाँ सर्व का मेरे से, मेरा सर्व से प्यार है वहाँ मेरे बाबा की दुआयें हैं। इससे ही मुझ आत्मा की उन्नति है। यह हमारा अन्तिम जन्म, अन्तिम घड़ी है, किसकी हमारे ऊपर दुआ नहीं है तो उससे किसी भी तरह दुआयें जरूर लेना है।

15) हमारे अन्दर अनुमान, परचिन्तन, ईर्ष्या, द्वेष आदि का कांटा नहीं होना चाहिए। इन कांटों को इस यज्ञ में स्वाहा करो।

16) जहाँ नियम है वहाँ संयम है। जहाँ कायदा है वहाँ फायदा है। ईश्वरीय मर्यादा ही हमारा स्वधर्म है। सबसे प्रेम करो लेकिन प्यार मत दो, बाबा से सम्बन्ध जुटाओ स्वयं से नहीं। किसी से हल्का व्यवहार मत करो। गम्भीर रहो। हंसी-मजाक से भी बहुत नुकसान होता है इसलिए ऐसी हंसी नहीं करो। काम से काम बस... ओम् शान्ति।